unit 1(e)

B.A. III - Sem IV

Paper C-8

History of west Asia

रजाशाह पहलवी और ईरान

प्रशासनिक सुधार

महयपूर्व के इतिहास में ईरान एक अत्यन्त प्राचीन देश रहा है। इसकी भौगोलिक स्थिति के कारण इसका महत्व अत्यधिक है। इसके उत्तर में कैस्पियन सागर तथा रूस, दक्षिण में फारस की खाड़ी, पूरब में अफगानिस्तान तथा पश्चिम में तुर्की और ईराक स्थित है। 1935 में रजा शाह ने इसका नाम पर्सिया से बदलकर ईरान रख दिया था।

रजाशाह एक कुशल प्रशासक तथा क्रांतिकारी सुधारक था। रजाशाह रजा खाँ के नाम से प्रसिद्ध था। एक लंबे संघर्ष के बाद 25 अप्रैल 1926 को उसने रजाशाह पहलवी के नाम से मयूर-सिंहासन पर बैठा। उसका राजवंश पहलवी वंश कहलाया।

जिस समय वह गद्दी पर बैठा सरकारी राजकोष खाली था। देश में अव्यवस्था थी, धार्मिक कट्टरता राजनैतिक सुधारों का विरोध करती थी। जनता अशिक्षित थी तथा देश की आबादी का एक बहुत बड़ा भाग खानाबदोश कबीले के रूप में था।

इन्हीं परिस्थितियों में रजाशाह ने व्यापक सुधार किए-

(1) सेना में सुधार - उसने अनिवार्य सैनिक शिक्षा और सैनिक सेवा की पद्धति प्रारंभ की। सैनिकों में अनुशासन के पालन पर जोर दिया गया। सैनिकों को समय पर वेतन मिलने लगा। सेना में कई नियमों को लागू किया गया। इसी सेना के सहारे उसने कुचुक खाँ, खोरासान, अजरबैजान तथा कुर्द जातियों के विद्रोहों को दबाया। आन्तरिक शत्रुओं के षडयंत्रों को नाकाम करते हुए ईरान पर मजबूत शासन कायम किया। उसने आन्तरिक सुधार के अन्तर्गत मजलिस में भी व्यापक सुधार किए।

2- न्याय व्यवस्था में सुधार - सर्वप्रथम उसने धार्मिक

Scanned with CamScanner

कचहरियाँ समाप्त की। फ्रांसीसी और स्विस नमूने पर न्यायालय और कानूनों का निर्माण हुआ। नए दीवानी और फौजदारी कानूनों को लागू करने के लिए आधुनिक ढंग के न्यायालय कायम किए गए। मुल्लाओं और काजियों की अदालतें समाप्त कर दी गई। तलाक का नया कानून बना। विवाह के लिए लड़कियों की आयु नौ वर्ष से बढ़ाकर पंद्रह साल कर दिया गया।

3 - <u>धार्मिक क्षेत्र में सुधार</u> -

सर्वप्रथम उसने न्यायव्यवस्था को धार्मिक नियंत्रण से मुक्त किया। धार्मिक गुरु वर्ग के अधिकारियों के अधिकारों में कटौती की गई, उनकी जायदादें जब्त की गईं, धार्मिक खेल-तमाशों पर पाबंदी लगाई गई। मुहर्रम के दसवें दिन शोक मनाना और ताजिया निकालना बंद कर दिया गया। अरबी महीने की जगह फारसी महीने शुरू किए गए। इस्लामी चन्द्र तिथिक्रम के स्थान पर ईरानी सौर तिथिक्रम लागू किया गया। हाजी, करबलाई, मशहदी जैसी धार्मिक उपाधियों को हटा दिया गया। 1930 ई० में ~~धार्मिक~~ मदरसे बंद कर दी गई। धर्मनिरपेक्ष राज्य की नींव डाली गई।

4 - <u>आर्थिक सुधार</u> -

ईरान की आर्थिक स्थिति दयनीय थी अतः इस क्षेत्र में सुधार लाने के लिए उसने अमेरिकन अर्थविशेषज्ञ डा० आर्थर चेस्टर मिलसपौग को ईरान बुलाया। इसने एक लंबे समय (1927 तक) ईरान में रहकर प्रयाप्त परिवर्तन के सुझाव दिए। इसके पश्चात् उसने जर्मन विशेषज्ञ डा० लिंडन ब्लाट को आमंत्रित किया

इनकी सहायता से ईरान में राष्ट्रीय बैंक खुले। नोट छापने का कार्य आरंभ हुआ। 1931 ई० में राज्य ने व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया। उद्योग-धंधों से सम्बद्ध अनेक कल-कारखाने खोले गए। विदेशों से व्यापार बढ़े। जहाज बनाने का उद्योग चालू किया गया। चीनी, चाय, नमक, अफीम व पेट्रोल का व्यापार आरंभ हुआ। 1932 ई० में आंग्ल-ईरानी तेल कंपनी की सुविधाएं खत्म कर दी गई। पुनः अधिक रॉयल्टी प्राप्त होने पर चालू की गई। आर्थिक प्रगति के लिए स्वयं पूंजी लगाई तथा उद्योगपतियों को भी उत्साहित किया।

श्रमिकों के कल्याण के लिए फैक्ट्री कानून बनाए गए। विदेशियों को कृषि योग्य भूमि पर अधिकार की पाबंदी लगा दी गई।

5. <u>संचार व्यवस्था</u> - आर्थिक, व्यापारिक और सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संचार साधनों में सुधार लाया गया। 1927 ई० में ट्रांस-ईरानियन रेलवे का कार्य प्रारंभ हुआ। जर्मन कम्पनी को डाक व्यवस्था का भार सौंपा गया। 1928 में एक ब्रिटिश संस्था को ईरान के तट पर वायु सेवा का अधिकार दिया गया। जर्मन जंकर वर्क्स ने तेहरान से इस्फाहान तक हवाई यातायात जारी किया। 1928 ई० में इटली के बेड़े से दो जंगी जहाज मंगाकर नौसेना की नींव डाली गई। इसी प्रकार डाक-तार विभाग का भी विकास किया गया। 1931 ई० में ब्रिटिश इण्डो-यूरोपियन तार कंपनी का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। देश में सड़कों के विकास के लिए जर्मन विशेषज्ञों से परामर्श लिया गया। 1939 ई० में 20,000 मील लंबी सड़क बनकर तैयार हो गई। अब लोगों को स्वदेशी के व्यवहार पर जोर दिया जाने लगा।

Scanned with CamScanner

6- भूमि सुधार एवं राजस्व व्यवस्था

रजा शाह ने समस्त भूमि के सर्वेक्षण एवं बंदोबस्त की व्यवस्था की तथा लगान की दरों में एकरूपता लाने का प्रयास किया। 1922 ई० में एक कानून बनाकर संपत्ति संबंधी दस्तावेजों का पंजीकरण अनिवार्य कर दिया। इस कार्य के लिए अलग विभाग खोले गए। 1931 ई० में अनाज की कीमतें निश्चित की गई। नवम्बर 1937 ई० में कृषि विकास कानून लागू किए गए। गाँव के मुखिया को सरकारी कानून और आज्ञा को प्रसारित करने का दायित्व दिया गया। जिला कृषि परिषद को ग्राम विकास की योजना बनाने और जमींदारों का कार्य निश्चित करने का अधिकार दिया गया। यह भी आदेश पारित किया गया कि अगर जिला परिषद योजनानुसार विकास नहीं करती है तो उसका स्वामित्व समाप्त कर भूमि कृषि-निगम को सौंप दी जाएगी। लेकिन जमींदारों के विरोध के कारण यह लागू नहीं हो सका।

न्याय मंत्रालय को यह अधिकार दिया गया कि वह भूमि की किस्म, सिंचाई की सुविधा, मजदूरी तथा बीज का लेखा-जोखा और पशुओं की आवश्यकता को देखते हुए जमींदार और किसान का हिस्सा निश्चित निश्चित करे। किसानों को पशुपालन और बागलगानि के लिए उत्साहित किया गया। लेकिन 1939 ई० में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाने के कारण योजना अधूरी रह गई। 'खालसा भूमि' जिसे 'खालसा इन्तकाली' कहा जाता था बेचने के लिए 1931 में कानून बनाया गया। वैसे भूमि जो राज्य की निजी सम्पत्ति थी इसे 'खालसा दीवानी' कहा जाता था, इसके प्रबंधन

के लिए 1944ई० में एक संस्थान का गठन किया गया जिससे भूमि की व्यवस्था में स्पष्टता आई।

सिंचाई के विकास के लिए कृषि मंत्रालय के अधीन एक सिंचाई संस्थान गठित किया गया। इसके लिए साढ़े चार लाख रियाल का वार्षिक अनुदान मंजूर हुआ। इसके बाद अजरबैजान में ~~व~~ एक कंपनी बनाई गई जिसके खर्च अनुमानित तीन सौ लाख रियाल था। सिंचाई की सुविधा से कृषकों और जमींदारी को लाभ पहुंचा।

7. <u>सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगति</u> –

(i) <u>स्त्रियों की दशा में सुधार</u> –

रजा शाह नारी-स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। वे ~~पर्दा~~ प्रथा के विरोधी थे। अतः महिलाएं बिना बुर्के पहने सार्वजनिक स्थानों में निकल सकती थी। 1935 ई० में एक महिला सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना की गई। महिलाएं अब राजकीय पदों पर काम कर सकती थी। पुरुषों के तलाक-संबंधी विशेषाधिकारों को समाप्त कर नारियों को समान सामाजिक अधिकार प्रदान किया गया।

(ii) <u>पोशाक में सुधार</u> –

1928 ई० में एक कानून पास कर पूर्वी पोशाकों के व्यवहार पर रोक लगा दी गई। फिज और पगड़ी की जगह पहलवी हैट पहनना पुरुषों के लिए अनिवार्य कर दिया गया। लेकिन बाद में इसे भी हटाकर यूरोपियन टोप अनिवार्य कर दिया गया।

1940 ई० में तेहरान में एक रेडियो स्टेशन खोला गया, जिसका मुख्य ध्येय रजाशाह के सुधारों का प्रचार करना था।

8. शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सुधार
शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार किए गए
शिक्षा के क्षेत्र में 1928 ई० में प्राथमिक शिक्षा
ताकि धार्मिक प्रभाव कम हो सके। 1928 ई० में प्राथमिक विद्यालय खोले
अनिवार्य कर दी गई। बड़ी संख्या में प्राथमिक विद्यालय खोले
गए। 1934 ई० में तेहरान में छह फैकल्टियों वाला एक
यूनिवर्सिटी खोला गया। इंजीनियरिंग तथा कृषि कॉलेज खोले
गए। बाद में तेहरान विश्वविद्यालय से संबद्ध कर दिया गया।
विदेशों से प्रशिक्षित अध्यापक बुलाए गए।
शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन करते हुए बालिकाओं
की शिक्षा, सह-शिक्षा, तथा वयस्क शिक्षा पर विशेष बल
दिया गया।

फारसी भाषा को प्रोत्साहन दिया गया। इसे अरबी
प्रभाव से मुक्त किया गया। कवियों, गद्यकारों और
साहित्यकारों ने ईरानी साहित्य को सम्पन्न किया। इस
काल के महान विभूति अबुल कासिम लाहुती (1887-1957)
ने अपनी कविताओं में क्रांति के गीत गाए। मुहम्मद
रिजा इश्की (1894-1924), मालिक उससुअरा बहार
(1882-1931) तथा मुहम्मद
(1886-1951), अबुल कासिम राष्ट्रवादी भावनाओं से
फारुखी (1889-1939) की रचनाएं
ओत-प्रोत थीं। परवीन-ए-इतिसामी (1907-41) इस
युग की प्रसिद्ध कवियित्री थीं।

इस प्रकार रजाशाह के प्रयासों के फलस्वरूप
ईरान एक आधुनिक राज्य बन गया। यद्यपि उसे कमालपाशा
की तरह सफलता नहीं मिली। इसके पीछे कई कारण थे
जैसे जनता का अशिक्षित व अंधविश्वासी होना, विश्वयुद्ध का
छिड़ना, यातायात के साधनों की कमी, यूरोप की दूरी, मजलिस
पर धर्म का प्रभाव, जातीय विविधता इत्यादि। लेकिन उसने
ईरान का पश्चिमीकरण करने की पूरी कोशिश की। पर इसका
लाभ सिर्फ उच्च वर्ग को ही हुआ, सर्वहारा वर्ग की
स्थिति ज्यों कि त्यों बनी रही।

[illegible]
DSPMU

Scanned with CamScanner